𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆃𑆑𑇀𑆰𑆫 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤

शारदा अक्षर ज्ञान



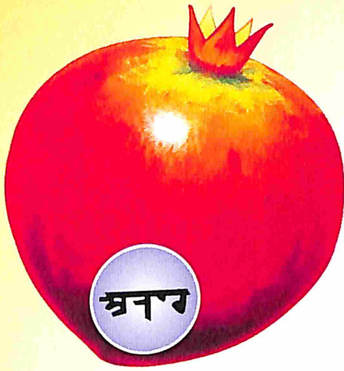
𑆨𑆳𑆓-𑇑

भाग-2



शारदा अक्षर ज्ञान

भाग–2

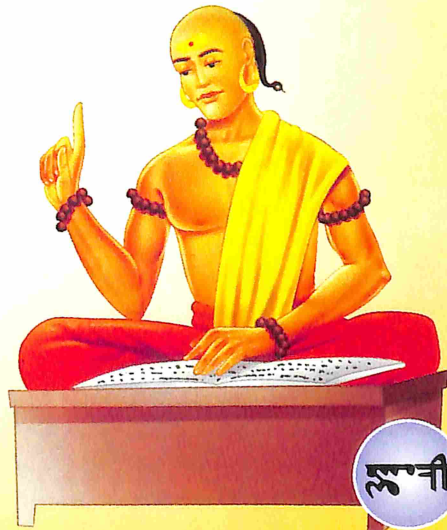














प्रकाशक

पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607, 09419133233

E-mail : punchang.vijayshwar@yahoo.com

पुस्तक का नाम : शारदा अक्षर ज्ञान, भाग-दो

संकलन एवं सम्पादन : पं0 ओंकार नाथ शास्त्री

प्रकाशक : पं0 प्रेम नाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

प्रतियां : 1000

दूसरा संस्करण : सन् 2016

मूल्य : ₹ 100/-



पुस्तक मिलने का पता

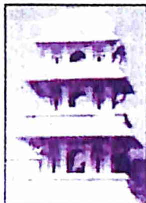
1 पं0 प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान, अजीत कालोनी, जम्मू-180002

2 विजयेश्वर पंचांग कार्यालय, अजीत कालोनी, तालाब तिल्लो एवं चिनौर, जम्मू

अनुक्रम

Website www.kamakoti.org
email kanchimutt@gmail.com

☎ 044-27222115
Acts 044-27224236
Fax 044-27224305



|| Sri Chandramouleeswaraya Namaha ||

Sri Sankara Bhaghavadpadacharya Paramparagatha Moolamnaya Sarvajnapeeta

His Holiness Sri Kanchi Kamakoti Peetadhipathi

JAGADGURU SRI SANKARACHARYA SWAMIGAL

Srimatam Samsthanam

No. 1, Salai Street, KANCHEEPURAM - 631 502.



Date : 18th Feb, 2014

Message



The Richness of a Culture is reflected in its Language. Kashmir is well known for its civilization and culture. The Lipi or Script forms an important part of any language, aiding in written presentation of content. Unique to Kashmir is the Sharda Lipi, one of the most ancient scripts of our Country. Its uniqueness is also due to the Lipi bearing the name of the Goddess of Learning herself.

With a view to rejuvenating this rich aspect of Kashmiri Culture and popularizing it among the present generation, especially right from the early childhood days when the impressions are easy to make & retain for a long time. Of the very many efforts to protect the Sharda script, an initiative was undertaken by Shri Omkarnath Shastriji of the famous Vijayeshwar Panchang to publish an introductory book on the alphabets of the Sharda Script for young ones. The book was brought out and distributed to a large number of children. In continuation of this, this second volume of the book is being brought out.

Kashmir is home to several books and ancient manuscripts written in the Sharda lipi, containing a treasure trove of Knowledge. A good learning of the lipi will open the flood gates of this rich knowledge source and enable the readers to appreciate the works in its original form and intent. This will help not only the people of the State but also others to understand in its true sense and form, and appreciate its rich culture, heritage, traditions and history.

Blessings of His Holiness is conveyed to Shri Omkarnath Shastriji and to all those who have contributed to this work.

Sri Kanchi Kamakoti Peetam,
...Sankaracharya Swamigal Srimutt.

Srikaryam & Agent



वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल साङ्गवेद विद्यालयः

(वैदिकसमाज [पञ्जी॰] द्वारा सञ्चालित तथा महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रीयवेदविद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन से सम्बद्ध)
४६, संगमविहार, नजफगढ़, नई दिल्ली-४३, दूर॰- ९८६८५८९९७६, ९९१०७७१०७१

दिनाङ्कः- २२-१०-२०१४

शुभाशंसा

वस्तुतः भगवति शारदा कश्मीरमण्डलस्य मुख्याऽऽराध्या । कश्मीरदेशस्य लिपिरपि शारदा भगवत्याः शारदायाः प्रतिमूर्तिरिवास्ति। यवनैराक्रान्तेऽस्मिन्मण्डले शारदालिपिविज्ञाः दुर्लभाः दृश्यन्ते। महद्धर्षस्य विषयोऽयं यच्छ्रीमन्त ओंकारनाथशास्त्रिवर्याः महता प्रयासेन शारदालिपेः प्राथमिकं (Primer) पुस्तकं प्रकाशितवन्तः। तन्मयाऽवलोकितम्। पुनश्च सम्प्रति शारदालिपेः द्वितीयं पुस्तकमपि प्राकाश्यं नीयत इति श्रुत्वा मोमुद्यते मे मनः। यत्र ककाराद्यक्षराणां द्वादशमात्रात्मिकाः वर्णाः (बारहखडी), सर्वाणि संयुक्ताक्षराणि शब्दानां च सम्यगक्षरयोजना समवबोधिताः। एतत्पुस्तकं शारदाजिज्ञासूनां महत्कल्याणाय भवितेति मे विश्वासः। एतदर्थं श्रीओंकारनाथशास्त्रिणः साधुवादार्हास्तथा परमपितापरमेश्वरः सपरिकरेभ्यस्तेभ्यः सुसामर्थ्यन्दद्यादिति प्रार्थये।

शुभमङ्गलकामः-
गौडवंशोद्भवो मिश्रोपाह्वः
कीर्त्तिकान्तः
(कीर्त्तिकान्तः शर्मा)

सहायकाचार्यः, कलानिधि विभाग, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली-११०००१। दूरभाषः- ०११-२३३८८०६९, ०९८६८५८९९७६



दो शब्द

हिमालय की कोक्ष में कश्यप ऋषि के द्वारा बसाया गया कश्मीर प्रदेश ऋषि, मुनियों की तपोभूमि रहा है। यह देव, गन्धर्व, यक्ष तथा किन्नरों का लीला स्थल रहा है, इसी कारण इस को भूतल स्वर्ग कहा गया है। कश्मीर प्राचीन काल से पूरे विश्व में प्राकृतिक, साहित्यिक, धार्मिक, संस्कृत, ज्योतिष, कर्म काण्ड तथा इतिहास का केन्द्र रहा है।

कश्मीर को शारदा देश भी कहा जाता है। मां शारदा, कश्मीर की प्रधान देवी है, शारदा कश्मीर के पश्चिम में स्थित हिन्दुओं का प्राचीनतम तीर्थो में से एक है। शारदा तीर्थ श्रीनगर से 130 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है, जो आज कल पाक अधिकृत कश्मीर में है। यह स्थल शारदा अध्ययन का केन्द्र था। शारदा लिपि कश्मीर की प्राचीन संस्कृति तथा सभ्यता का चिह्न है। यह लिपि हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रयत्न से बनाई है। इस का जन्म मूलत: ब्राह्मी लिपि से हुआ है, गुरुमुखी भी शारदा लिपि का रूपान्तर है। कश्मीर के प्राचीन शैव, तान्त्रिक, ऐतिहासिक, ज्योतिष, षट्दर्शन शिवमत एवं धर्मशास्त्र संबंधित सभी ग्रन्थ इस शारदा लिपि में लिखे गये थे। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जोणराज ने अपना इतिहास शारदा लिपि में ही लिखा था, पाणिनी का विश्व प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ शारदा लिपि में लिखा गया था। कल्हण की राजतरंगिणी भी शारदा लिपि में लिखी गई थी। परन्तु समय की भीषण चपेटों तथा क्रूर शासकों के कारण यह अमूल्य भण्डार ध्वस्त हो गया। इस प्रकार हम कश्मीर के प्राचीन समय के इतिहास के प्रामाणिक तथ्यों से वंचित हो गये।

इस शारदा लिपि के पुनरुद्धार के लिये पं0 प्रेम नाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने 2012 में "शारदा अक्षर ज्ञान भाग-एक" वर्णमाला पुस्तक का प्रकाशन किया। जिस का विमोचन जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री एन0एन0 वोहरा के कर कमलों द्वारा हुआ। माता ज्येष्ठादेवी (श्रीनगर) के प्रांगण में इस भव्य समारोह का आयोजन हुआ था। इसी शुभ कार्य को आगे बढ़ाते हुए जब शारदा अक्षर ज्ञान भाग-२ का कार्य चल रहा था तो शारदा लिपि का फाण्ड कम्प्यूटर में देखा गया परन्तु देखने में आया कि कम्प्यूटर के फाण्ड में बहुत सी त्रुटियां है जिस कारण भाग-2 के प्रकाशन में विलम्ब हुआ फिर शोध संस्थान ने प्राचीन हस्त मुद्रित बहुत सी पत्रिकाओं, ग्रन्थों तथा विशेषतौर से हमारे पूर्वजों द्वारा शारदा लिपि में छपे हुई 70 वर्षों के विजयेश्वर पंचांग की प्रतियों का पूरा अध्ययन करके शारदा अक्षर ज्ञान भाग-2 को अन्तिम रूप दिया गया। यहां इस बात का उल्लेख करना परमावश्यक है कि हमारे समाज के प्रबुद्ध विद्वान एवं हिंदी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक डा. महाराजकृष्ण भरत पं. प्रेमनाथ शास्त्री संस्कृतिक शोध संस्थान की योजनाओं से जुड़े रहे है और इन सांस्कृतिक अनुष्ठानों में अपनी सेवाएं अर्पित करना वह अपना कर्त्तव्य समझते है। शारदा अक्षर ज्ञान भाग-1 और सह प्रकाशित भाग-2 के सम्पादन में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है, जिसके लिए वह निसंदेह साधुवाद के पात्र हैं। शोध संस्थान 'शारदा अक्षर ज्ञान भाग-2' प्रकाशित करने जा रहा है। आशा है इस शुभ कार्य में आप सभी

अपना सहयोग देंगे तथा अपने पूर्वजों की इस धरोहर को अगली पीढी तक सुरक्षित पहुंचाने में योगदान देकर अपने बच्चों को इस भाषा की ओर प्रेरित करेंगे और खुद भी पढेंगे।

शारदा लेखन विधि:

पहले पहल शारदा लिपि ईरानी कलमों अथवा तराशी हुई निबों से लिखी जाती थी, इस के लिखने के लिये बाजार में भिन्न-भिन्न प्रकार की तराशी हुई निबें मिलती थी जिस से किताबत करने वाले 'शारदा' लिखते थे। जिस से शारदा लिपि की वास्तविकता तथा सुन्दरता सुरक्षित रहती थी। आज कल हम पिंसलों तथा ल्यड प्यनों से शारदा लिखते हैं जिस के फल स्वरूप शारदा लिपि की वास्तविकता तथा सुन्दरता समाप्त होती रही। इसी कारण शारदा लिपि के स्वरों तथा व्यंजनों में किसी किसी स्थान पर कुछ अन्तर देखने में आता है। मूलतः वह हमारे लिखने के कारण ही दिखाई देता है।

नोट:

शारदा अक्षर ज्ञान भाग-1 में कुछ त्रुटियां देखने में आई जिन को भाग-2 में शुद्ध करने का पूरा प्रयास किया गया है।

जैसे :

देवनागरी	शारदा	देवनागरी मात्रायें	शारदा मात्राएं
ङ		ए	
ढ़		ऐ	
ण		औ	
		उ	
		ऊ	

(ओंकार नाथ शास्त्री)

दिनांक : 7 मार्च 2016

09419133233



उपोद्घात

'शारदा अक्षर ज्ञान' भाग-एक सचित्र वर्णमाला पुस्तक के प्रकाश में आने के साथ ही पं प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने यह दृढ़ संकल्प लिया था कि इस पुस्तक का दूसरा भाग योजनाबद्ध रूप से यथासमय प्रकाशित होगा। जहां कथनी और करनी अभेद हो जाती है, वहां कर्म का सुफल बहुजनहिताय हो जाता है। 'शारदा अक्षर ज्ञान (भाग दो) के प्रकाश में आने से जहां सांस्कृतिक शोध संस्थान ने अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है, वहीं प्राचीन शारदा लिपि के उत्थान हेतु बरसों से अवरुद्ध पड़ी सांस्कृतिक धारा को प्रवाहित होने का सुअवसर मिला है। शारदा लिपि के जिज्ञासु पाठक और नव-आगंतुक अपनी ज्ञान पिपासा को शांत कर पाएंगे, ऐसी आशा की जानी स्वाभाविक ही है।

सन् 2012 में प्रकाशित प्रारम्भिक 'शारदा अक्षर ज्ञान' वर्णमाला में लिपि के इतिहास पर संक्षिप्त में प्रकाश डालते हुए कुछ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों का भी उल्लेख किया गया है, जिनमें कल्हण पण्डित द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'राजतरंगिणी', भट्टावतार कृत 'बाणासुर कथा' तथा भास्कराचार्य द्वारा शारदा लिपि में लिखित चौदहवीं शती की संत कवयित्री ललद्यद के वाख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहां बताना अप्रासंगिक न होगा कि दसवीं शताब्दी में जिस कुटिल लिपि से देवनागरी का विकास हुआ उसी लिपि से नौवीं शती में शारदा लिपि का रूप भी हमारे सामने आया है। कुटिल लिपि से पूर्व गुप्त और उससे पहले ब्राह्मी लिपि रही है। ई0पू0 500 से 350 ई0 तक भारत में ब्राह्मी लिपि के साक्ष्य मिले हैं। वर्णप्रधान अक्षरात्मक ब्राह्मी लिपि ही पहले संस्कृत भाषा के लेखन का माध्यम बनीं और कालांतर में इसका स्थान शारदा ने ले लिया।

इतिहास साक्षी है कि न केवल उत्पल राज वंश (नौवीं शती), दुर्लभ वर्धन, जयापीड, रानी दिद्, अवंतीवर्मन, महाराजा ललितादित्य मुक्तापीड़, मुस्लिम शासक जैनुल-आबदीन तथा पठान शासकों (18वीं शताब्दी) तक कहीं-कहीं खंडित तथा कहीं पूर्ण रूप में स्वर्ण मुद्राओं, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, कांस्य प्रतिमाओं, मंदिरों, राज प्रसादों तथा घोषणापत्रों में हमें इस लिपि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं वरन् नौवीं शती से भी पूर्व पहली शती में महाराजा तुञ्जीन के शासनकाल में शिलालेखों पर शारदा के प्रमाण मिले हैं। ऐसे ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि शारदा लिपि दीर्घकाल तक कश्मीर की राजभाषा रही है और आम जनता भी अपनी दिनचर्या में इस का व्यवहार करती रही है।

जम्मू कश्मीर के अतिरिक्त पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पूर्व व दक्षिण भारत में भी इस लिपि का प्रचलन रहा। उत्तर दक्षिण भारत समेत विश्व के कई देशों से जो विद्यार्थी और विद्वतजन यहां ज्ञान की खोज में आते थे, उन्हें शारदा सीखनी पड़ती थी, क्योंकि विद्या अध्ययन का माध्यम ही यह लिपि थी। ज्ञान-विज्ञान की अनेक धाराओं का ज्ञान प्राचीन शारदा माता मंदिर में प्रतिष्ठित शारदा पीठ से अर्जित किया जाता रहा है। यहां कभी आद्य गुरु शंकराचार्य को शिव की शक्ति का बोध हुआ था। कई विदेशी विद्वानों ने भी इस पावन स्थल की महिमा का गुणगान किया है। शारदा माता के नाम से ही इसे शारदा देश भी कहा जाता रहा है। कश्मीर प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं, ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार से विश्व विख्यात था। वर्तमान परिस्थितियां हम सब के सामने हैं।

यह शारदा ही थी जिसे गुरुमुखी और टाकरी लिपियों का विकास हुआ। गुरुमुखी आज पंजाब प्रांत की प्रमुख लिपि है जिसे न केवल शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाता है वरन् प्रशासन में भी कामकाज की भाषा का इसे गौरव प्राप्त है। दैनिक समाचार पत्र भी इस लिपि में छपते रहते हैं। पर शारदा अपने विकास काल में छाल और भोजपत्रों पर अनमोल साहित्य देकर विलुप्त हो गई, क्योंकि इस लिपि को मुख्य धारा में लाने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सकारात्मक प्रयास नहीं हुए। यदि इस लिपि के मुद्रण, प्रकाशन की योजनाएं प्रारम्भ हुई होतीं तो आज इस लिपि का पूर्व साहित्य और वर्तमान पक्ष भी उजागर होता। ब्राह्मी लिपि से उद्‌भुत बंगला, तमिल, तेलुगू आदि लिपियां आज उतरोत्तर विकास पा रही हैं क्योंकि इनके सीखने के माध्यम उपलब्ध रहे हैं।

सहस्र वर्षों के पुरातन इतिहास, धर्म-संस्कृति की साक्ष्य रही इस लिपि में कई अनमोल ग्रन्थों की रचना संस्कृत में हुई। मध्यकालीन कश्मीर के रक्त रंजित इतिहास के लगभग ६०० वर्षों में इस लिपि ने कई आततायी आक्रमणकारियों के प्रहार झेले, जिस कारण इस का विकास क्रम थम सा गया। अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियां स्वाह हो गईं, कुछ विदेशी अपने साथ उठा कर ले गए। ताम्रपत्रों, स्वर्ण मुद्राओं पर उत्कीर्ण शारदा लिपि के साक्ष्य आक्रमणकारी क्या जाने, उन्हें तो धन दौलत की चाह थी। विश्वविख्यात विश्वद्यिालय शारदा पीठ को ऐतिहासिक मार्तण्ड मंदिर की तरह नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। शारदा पीठ के भग्नावशेष पाकिस्तान द्वारा हथियाए गए भारतीय भू भाग में अपनी विध्वंस की कथा कह रहे हैं। ऐसे में भारतीय संस्कृति की अमूल्य सम्पदा हमसे छीनी गई और आज स्वतंत्र भारत में भी हम कश्मीर की उस गौरवशाली परम्परा, इतिहास, साहित्य, त्रिक् शास्त्र, तंत्र-मंत्र विद्या, दर्शन, ज्योतिष, गणित, कर्मकाण्ड जैसे अनमोल हस्तलिखित ग्रन्थों को भावी पीढ़ी तक नहीं ले जा पा रहे हैं। यह भारतीय वाङ्मय के लिए भी अपूर्णीय क्षति है, जिसे कश्मीर के प्राचीन संस्कृत आचार्यों ने समृद्ध किया था।

वर्तमान में शारदा लिपि के रूप में देश-विदेश के पुस्तकालयों/संग्रहालयों व घरों में शारदा लिपि की पाण्डुलिपियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था या फिर कहीं अव्यवस्थित ढंग से सुरक्षित हैं, पर आज

हम उन तक पहुंचने में असमर्थ हैं, क्योंकि हमारे पास इस लिपि के ज्ञाता नगण्य ही हैं।

इस बात का उल्लेख हमने 'शारदा अक्षर ज्ञान' (भाग-एक) में भी किया है कि आज समय के थपेड़ों-झंझावातों के बीच एक अंतराल से उपेक्षा झेल रही इस लिपि को फिर से अपने गौरवमयी प्रतिष्ठित पद पर आसीन करने की अद्भुत पहल पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान ने की है। ज्योतिष शास्त्र के जाज्वल्यमान नक्षत्र, प्रकाण्ड विद्वान स्व0 पण्डित प्रेम नाथ शास्त्री के सुपुत्र एवं विजयेश्वर पंचांग के पूर्व सम्पादक एवं वर्तमान में संशोधक पं ओंकारनाथ शास्त्री ने कश्मीर की पुरातन सांस्कृतिक विरासत को संजोने का जो बीड़ा उठाया है वह प्रशंसनीय ही नहीं, प्रेरणास्पद भी है। अपने पिताश्री के नाम से गठित इस सांस्कृतिक शोध संस्थान के माध्यम से उन्होंने समाज के साथ जो तादात्म्य स्थापित किया है वह निस्संदेह प्रोत्साहित करने वाला है। विजयेश्वर पञ्चांग के माध्यम से हर घर में 'पण्डित' को स्थापित करने वाले पं. प्रेमनाथ शास्त्री का नाम लोक प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने जीवन काल में कश्मीरी पण्डितों के धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में जो अतुलनीय योगदान दिया, भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए जो कार्य किया और शारदा लिपि के पुनरुत्थान हेतु जो पहल की, उसी विरसे को पं. ओंकारनाथ शास्त्री ने अपने में आत्मसात् करते हुए नई खोज व नव-अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए अपने स्वाध्याय के बल पर ज्ञान की अजस्रधारा को प्रवाहित करने का प्रयास किया है।

'शारदा अक्षर ज्ञान (भाग-एक) के द्वारा जिस लिपि को जीवंत रखने का श्रीगणेश हो चुका है उसे भाग-दो वर्णमाला पुस्तक से विशेष बल प्रदान होगा। 'शारदा अक्षर ज्ञान' (भाग दो) को आपके हाथों में सौंपकर सांस्कृतिक शोध संस्थान के संस्थापक एवं इस अभियान में संलग्न सांस्कृतिक कर्मियों को हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह प्रथम भाग की तरह ही देवनागरी लिपि के माध्यम से शारदा तक पहुंचने का एक सतत् प्रयास है। हिन्दी की लिपि देवनागरी की तरह ही शारदा को बाएं से दाएं की ओर लिखा जाता है। दोनों लिपियां अक्षरात्मक हैं।

प्रस्तुत वर्णमाला पुस्तक की रूपरेखा बनाते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि शारदा अक्षर ज्ञान के प्रति जिज्ञासु पाठक स्वयं ही इस लिपि को लिखने तथा पढ़ने का अभ्यास प्रारम्भ कर सकें। ऐसी ही वर्णमाला की पुस्तकें शिक्षक बनकर हमें उस विस्मृत इतिहास की ओर ले जाएगी, जहां प्राचीन पाण्डुलिपियों में संगृहीत विपुल साहित्य अपनी कथा कहने के लिए छटपटा रहा है और शब्द अपने कलेवर से बाहर आकर अर्थ पाने को आतुर हैं।

इतिहास के भिन्न-भिन्न काल खण्डों में व्यवहृत इस लिपि के गठन में अनेकरूपता का मिलना स्वाभाविक है। शारदा का प्राथमिक ज्ञान कराने के उद्देश्य से बनाई गई इस वर्णमाला पुस्तक में वर्णों की एकरूपता पर विशेष बल दिया गया है। यह हमारे लिए एक सुखद समाचार है

कि शारदा लिपि को कम्प्यूटरकृत करने के लिए इसके वर्णों के फॉण्ट तैयार हो चुके हैं, पर इस ओर अभी भी अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। हमने मूल हस्तलिखित शारदा लिपि के अक्षरों को अपनाते हुए कंप्यूटर का भी प्रयोग किया है।

अद्यतन प्रकाशित पुस्तक में सर्वप्रथम वर्णमाला का परिचय देते हुए स्वर और व्यंजनों को सचित्र दर्शाया गया है। तदन्तर हिन्दी की 'बारहखड़ी' की तरह शारदा की मात्राओं को उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों के साथ यथारूप मिलाकर प्रदर्शित किया गया है। इस क्रम में अनुनासिक ध्वनियों समेत संयुक्त व्यंजनों को भी स्थान दिया गया है। अंत में तेरह विशेष अभ्यास पाठों को संकलित किया गया है जिनके माध्यम से अक्षर ज्ञान पा रहे शारदा के स्वयं 'शिक्षक-विद्यार्थी' अक्षर को जोड़ने के क्रम से लेकर स्वरों की मात्राओं समेत अनुस्वार तथा विसर्ग को शब्दों तथा वाक्यों में प्रयोग करना सीख सकेंगे। यहां पर वर्णों के परिचय के अनन्तर शारदा के अंकों का परिचय भी दिया गया है। देवनागरी लिपि के अंकों से इनकी कहीं समानता नहीं दिखती।

देवनागरी लिपि और शारदा वर्णमाला के अक्षरों में जब हम साम्य और वैषम्य पर ध्यान देते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि स्वरों में यह समानता हमें केवल 'उ' 'ऊ' में मिलती है जबकि व्यंजनों में थोड़ी बहुत समानता ग, न, य, ल और व में है। मात्राओं में 'ि', 'ा' तथा अनुस्वार और विसर्ग में साम्य है। अक्षर ज्ञान करते समय शारदा के कुछ वर्णों को पूरी सावधानी के साथ आत्मसात् करने की आवश्यकता है क्योंकि कुछ वर्णों में कम ही भिन्नता है। देवनागरी और शारदा लिपि में तब भिन्नता और अधिक झलकने लगती है जब शारदा में संयुक्त अक्षरों का प्रयोग प्रारम्भ होता है। कहीं-कहीं पर शारदा के संयुक्त अक्षर कुछ भिन्न ही आकार ग्रहण करते हैं। इसी कारण शारदा लिपि के ज्ञाता रहे डा0 श्रीनाथ तिक्कू ने अपनी पुस्तक 'शारदा लिपि दीपिका' में आधिकारिक रूप से कहा है कि "वास्तव में संयुक्त वर्णों को पढ़ना और लिखना ही शारदा वर्णों का पूर्ण ज्ञान माना जा सकता है।" महाराजा तुंजीन का संदर्भ भी इन्हीं की पुस्तक से लिया गया है।

देवनागरी की अपेक्षा शारदा में ॠ, ऌ और ॡ के अतिरिक्त स्वर भी हैं और देवनागरी की ही तरह अनुस्वार और विसर्ग भी है। इस वर्णमाला पुस्तक में ऌ, ॡ का समावेश नहीं किया गया है, जबकि प्रथम भाग में इन को स्थान दिया गया है। चार संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त शारदा में भी 33 व्यंजन है। इस बार शारदा वर्णमाला भाग-2 में संयुक्त व्यंजन 'श्र' (मू) को भी जोड़ा गया हैं। 'श्र' से ही 'श्री' बनता है और इस शब्द का कश्मीर के धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में विशेष महत्त्व है और 'श्री' ही है जो व्यक्तियों के नामों के पूर्व भी प्रयुक्त होता है। यह सर्वविदित है कि कश्मीर श्रीविद्या का प्रमुख केंद्र रहा है।

कश्मीर में जिस ब्राह्मण वर्ग ने शारदा वर्णमाला को चिरकाल तक संरक्षित रखा, आज उसी

वर्ग ने इस थाती को प्रकाश में लाने का बीड़ा भी उठाया है। इस संदर्भ में पहले भी अल्प प्रयास होते रहे हैं। पं0 प्रेमनाथ शास्त्री ने तो शारदा वर्णमाला की एक लघु पुस्तिका हमारे सामने लायी थीं। डा0 श्रीनाथ तिक्कू के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान युग में पं0 प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान द्वारा उठाया गया ऐसा विरला कदम सम्भवतया पहला सार्वजनिक प्रयास है। आने वाले समय में ऐसे प्रयासों को जारी रखने और इस लिपि की गरिमा को बनाए रखने की आवश्यकता है। शारदा वर्णमाला के प्रकाश में आने से इसकी लोकप्रियता बढ़ी है, तभी तो इसके प्रथम भाग की प्रतियां देश की कुछ प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों ने भी मंगवाई हैं तथा कुछ प्रतियां विदेश भी पहुंची है।

शारदा का ज्ञान बच्चों को प्राथमिक स्तर पर कराने के लिए तमिलनाडु में देश के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक पीठ श्री काँची कामकोटि पीठम् नं 1, कांची पुरम ने 'शारदा अक्षर ज्ञान' भाग-प्रथम को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। इसे सांस्कृतिक शोध संस्थान की प्रथम उपलब्धि माना जाएगा। देश के विख्यात विश्वद्यिालय जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने भी भाग-प्रथम की पुस्तकें मंगवा कर इस लिपि के उत्थान में अपनी रुचि प्रदर्शित की है। कालांतर में ऐसे प्रोत्साहन और मिलने की आशा है जिन के द्‌वारा शारदा लिपि का उत्तरोत्तर विकास होगा।

इस बात का उल्लेख करना नितांत आवश्यक होगा कि जो व्यवसायिक कर्मी इस शारदा वर्णमाला को पुस्तकाकार देने का कार्य कर रहे हैं वह निस्संदेह साधुवाद के पात्र हैं। प्रस्तुत वर्णमाला पुस्तक तैयार करने में जो कठिनाइयां आयीं होंगी उससे इनकार नहीं किया जा सकता। शारदा के अक्षर संयोजन में जो प्रयास हुए हैं, वह प्रशंसनीय है।

मैं विशेषरूप से पं0 प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान के संस्थापक और यज्ञों की अखण्ड श्रृंखला से समाज की एकता को बढ़ाने वाले धर्म प्रणेता पं0 ओंकार नाथ शास्त्री का आभार व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने मुझे अपनी जड़ों की ओर लौटने के इस मंगलकार्य के साथ जोड़े रखा और संपादन में सेवाएं अर्पित करने की प्रेरणा दी।

शारदा वर्णमाला की प्रासंगिकता तब और बढ़ेगी, जब हम इस अक्षर ज्ञान से अतीत में झांक कर प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को पढ़ने की ओर अग्रसर होंगे और भावी पीढ़ी को भी उस धरोहर से साक्षात्कार करा पाएंगे - जिसे हम भी बरसों से वंचित रहे। यह तभी सम्भव होगा जब हम शारदा वर्णमाला के पुरातन कलेवर को बनाए रखते हुए उसे युगानुरूप कंप्युटरीकृत प्रणाली से मेल कराने का प्रयास करेंगे, तभी हम शारदा लिपि की पुस्तकों को प्रकाशित करने में और समर्थ होंगे।

आइए संकल्प करें कि हम इस लिपि के अक्षर ज्ञान का अभ्यास स्वयं करेंगे और अपने परिचितों-अपरिचितों तक भी इस महाअभियान को ले जाने का प्रयास करेंगे। इतिहास की

भूल-भुलैयों में कल तक भटक रही इस लिपि के अक्षरों को फिर से अपना मान-सम्मान मिलें, ऐसी हम मां शारदा से प्रार्थना करते हैं जिनके नाम से इस लिपि के इतिहास का श्रीगणेश भी होता है। इस आयोजन की गरिमा तब और बढ़ेगी, जब विद्वतजन हमें अपने सुझावों एवं संशोधनों से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

प्रो० (डा०) महाराजकृष्ण भरत

दिनांक - 19 जनवरी, 2016

हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय अखनूर
जम्मू कश्मीर

श्री गणेशय नमः



SHARDA SCRIPT

Sharda is the oldest script used in Kashmiri Language and in ancient times Kashmir too was called Sharda Desh because of the sacred Shrine of Mother Goddess Sharda situated at the confluence of river Krishan Ganga and Madumati in the Village Shardi currently in occupied Kashmir by Pakistan. The Goddess in the temple is worshipped as embodiment of total energy that sustains the universe and as such is also worshiped as the goddess of knowledge or Saraswati as well. The temple was most famous in whole ol India and as such Adi Guru Shankaracharya visited the Shrine in 788-810A.D. The place was also a noted centre for learning Hindu Scriptures. The famous Vedic philosopher Swami'Ramanuj Acharya came to the shrine in the 12th Century A.D. Muslim scholars like Abul Fazal and Albruni as well came to the Shrine. The great Antiquary, Mark Ami Stein visited the Shrine in September 1892, Sharda script excelled upto 1 Oth and 1 lth Century A.D. and came up to the mark of the cultural magnificence of the times. It was followed by Sanskrit script but Sharda script continued as the basic script and the Kashmiri Pandits till this day are using the script in the preparations of Horoscopes. The basic progress in the knowledge in the land o±" mother goddess of learning went on touching the new spiritual height. In the first Century A.D. under the patriarchship of a Shivite and Bodh Scholar of Kashmir Nagarjunas who gave out to the world Mahayana Bodhism while Kashmiri Trika Shavism continued to make the lives of people peaceful and well meaning. Mahayana Boddhism went from Kashmir to Central Asia, Malaysia and further to Japan. Kashmiri Trika Shavism which is Shiva Shakti worship spread from the Himalayan heights to extreme South and making Indian people as one entity. This all came from Sharda Desha or Kashmir and started from Sharda Script.

But unfortunately this back bone script of Kashmir is presently almost dying although Sharda Manuscripts are available in all the major research libraries. Jammu Rughnath Mandir Library established by Dogra Maharaja Ranbir Singh has collected a good number of Sharda manuscripts of rarity. These treasures could help in consolidating the Sharda script. No doubt Muslim fanatic rulers of Kashmir have destroyed most of the Sharda and Sanskrit manuscripts but yet whatever is left behind in the research libraries and in position of exiled Kashmiri Hindus, a good start can be made if some dedicated efforts are made in the name of fostering Indian tradition culture in general and of Kashmiri Pandits in particular, who in spite of all sorts of pain, torture and annihilation inflicted on them, always tried to preserve the

inherited material to preserve culture and they left every thing when they were forced to leave Kashmir but only carried with them the Sharda manuscripts.

In this connection efforts of Shri Omkar Nath Shastri who represents the traditional Kashmiri Hindu Religious Organisation and issues yearly Kashmiri Religious Calender established over six hundred years before at Bijbehara Kashmir, which in spite of other facilities is upholding traditional cultural character of Kashmiri Hindus thrown out of Kashmir in 1989, is worthy to be praised and help extended to him in reviving the forgotten Sharda script which is an rare inheritance of India.

O.N. KAUL

(KAS Retd.

Hon. General Secretary J&K Historical

& Cultural Research,

312, Sector 9, Roop Nagar, Jammu Tawi)

शारदा देश की कलाकृति
हस्त मुद्रित नव ग्रह



















शारदा तीर्थ के भग्नावशेष



पाकिस्तान द्वारा हथियाए गए भारतीय भूभाग में अपनी विध्वंस की कथा कहते हुये शारदा तीर्थ।

शारदा स्वर तथा व्यंजन

शारदा अक्षर	देवनागरी अक्षर	कश्मीरी भाषा में पढ़ने की विधि	अंग्रेज़ी में पढ़ने की विधि		स्वर
𑆃	अ	आदव् अ	ādau	a	a
𑆄	आ	आतव आ	aitav	ā	ā
𑆅	इ	इयव इ	yēyēv yi	i	i
𑆆	ई	ईश्वरव ई	yisherav yi	ī	ī
𑆇	उ	उपल उ	wopal vo	u	u
𑆈	ऊ	उपलबा ऊ	wopal bā	ū	ū
𑆉	ऋ	रिनव् ऋ	renav	ṛ	ṛ
𑆊	ॠ	रूखव ॠ	rakhav	ṝ	ṝ
𑆋	लृ	लियव (लृ	leyav	ḷ	ḷ
𑆌	ॣ	लीसव ॣ	lisav	ḹ	ḹ
𑆍	ए	क्रालव ए	kralary	e	e
𑆎	ऐ	क्राली ऐ	kralia	ai	ai
𑆏	ओ	उठो ओ	watho	o	o
𑆐	औ	औषधी औ	ashidi	au	au
𑆃𑆁	अं	मसफ्युर अं	masphyor		•
𑆃𑆂	अः	जह फ्युर अः	do pheri		:
𑆑	क	कोव क	kov	ka	ka
𑆒	ख	खऽन्य ख	khān	kha	kha
𑆓	ग	गगर ग	gagar	ga	ga
𑆔	घ	घॅऽस घ	gāsi	gha	gha
𑆕	ङ	नारुग ङ	nārug	ṇa	ṇa
𑆖	च	चाटुव च	Tsāṭav	ca	ca
𑆗	छ	छ्टिन्य छ	Tshvatin	cha	cha
𑆘	ज	ज़ऽय ज	Zayi	Za	Za
𑆙	झ	झाश्यन्य झ	Zāshin	jha	jha
𑆚	ञ	खुनफुट ञ	Khvan phuṭi	ñ	ñ

शारदा स्वर तथा व्यंजन

शारदा अक्षर	देवनागरी अक्षर	कश्मीरी भाषा में पढ़ने की विधि	अंग्रेज़ी में पढ़ने की विधि		स्वर
𑆛	ट	अरमाण् ट	Armān	ṭa	ṭa
𑆜	ठ	सुरमाण् ठ	Sarmāṇ	ṭha	ṭha
𑆝	ड़	डुह ड	ḍak	dha	dha
𑆞	ढ़	ढक् ढ़	ḍak	dha	dha
𑆟	ण	नानगुरि ण	nānguri	ṇa	ṇa
𑆠	त	तोव् त	tav	ta	ta
𑆡	थ	थॅऽज्य थ	thāji	tha	tha
𑆢	द	ददुव् द	dadav	da	da
𑆣	ध	धून्य ध	dūn	dha	dha
𑆤	न	नस्तू न	nastav	na	na
𑆥	प	पडुर प	paḍāri	pa	pa
𑆦	फ	फरिन्य फ	phāriñ	pha	pha
𑆧	ब	बुह ब	bub	ba	ba
𑆨	भ	भाऽय भ	bāyi	bha	bha
𑆩	म	मोऽव म	mov	ma	ma
𑆪	य	याव य	yāv	ya	ya
𑆫	र	रकह र	raka	ra	ra
𑆬	ल	लाव ल	lāv	la	la
𑆮	व	वशि व	vash	va	va
𑆯	श	शकर श	shakar	śa	śa
𑆰	ष	फॅरि ष	phāri	ṣa	ṣa
𑆱	स	सुह स	sus	sa	sa
𑆲	ह	हालव ह	hālv	ha	ha
𑆑𑇀𑆰	क्ष	खुल व्युठ् क्ष			
𑆠𑇀𑆫	त्र	त्रुकत्रोव त्र			
𑆘𑇀𑆚	ज्ञ	ज़ीय ज़हस तल ख्वन फुटिञ			

हलंत् (्) (।) का प्रयोग

देवनागरी	शारदा
ज्+य = ज्य	𑆘𑇀+𑆪 = 𑆘𑇀𑆪
ख्+य = ख्य	𑆒𑇀+𑆪 = 𑆒𑇀𑆪
ग्+य = ग्य	𑆓𑇀+𑆪 = 𑆓𑇀𑆪
त्+न = त्न	𑆠𑇀+𑆤 = 𑆠𑇀𑆤
त्+म = त्म	𑆠𑇀+𑆩 = 𑆠𑇀𑆩
त्+य = त्य	𑆠𑇀+𑆪 = 𑆠𑇀𑆪
न्+त = न्त	𑆤𑇀+𑆠 = 𑆤𑇀𑆠
न्+द = न्द	𑆤𑇀+𑆢 = 𑆤𑇀𑆢
न्+य = न्य	𑆤𑇀+𑆪 = 𑆤𑇀𑆪
ब्+द = ब्द	𑆧𑇀+𑆢 = 𑆧𑇀𑆢
ब्+य = ब्य	𑆧𑇀+𑆪 = 𑆧𑇀𑆪
क्+य = क्य	𑆑𑇀+𑆪 = 𑆑𑇀𑆪
द्+य = द्य	𑆢𑇀+𑆪 = 𑆢𑇀𑆪
ङ्+क = ंक	𑆕𑇀+𑆑 = 𑆕𑇀𑆑
र्+ज = र्ज	𑆫𑇀+𑆘 = 𑆫𑇀𑆘
र्+द = र्द	𑆫𑇀+𑆢 = 𑆫𑇀𑆢
क्+र = क्र	𑆑𑇀+𑆫 = 𑆑𑇀𑆫
ग्+र = ग्र	𑆓𑇀+𑆫 = 𑆓𑇀𑆫
प्+र = प्र	𑆥𑇀+𑆫 = 𑆥𑇀𑆫
ब्+र = ब्र	𑆧𑇀+𑆫 = 𑆧𑇀𑆫

देवनागरी	शारदा
क्+त = क्त	𑆑𑇀+𑆠 = 𑆑𑇀𑆠
त्+र = त्र	𑆠𑇀+𑆫 = 𑆠𑇀𑆫
ज्+ञ = ज्ञ	𑆘𑇀+𑆚 = 𑆘𑇀𑆚
श्+व = श्व	𑆯𑇀+𑆮 = 𑆯𑇀𑆮
श+र = श्र	𑆯𑇀+𑆫 = 𑆯𑇀𑆫
न्+द = न्द	𑆤𑇀+𑆢 = 𑆤𑇀𑆢
र्+ब = र्ब	𑆫𑇀+𑆧 = 𑆫𑇀𑆧
न्+ध = न्ध	𑆤𑇀+𑆣 = 𑆤𑇀𑆣

संयुक्त वर्ण

देवनागरी	शारदा
क्क	𑆑𑇀𑆑
क्र	𑆑𑇀𑆫
क्न	𑆑𑇀𑆤
क्व	𑆑𑇀𑆮
क्म	𑆑𑇀𑆩
क्य	𑆑𑇀𑆪
क्ल	𑆑𑇀𑆬
क्त	𑆑𑇀𑆠
क्स	𑆑𑇀𑆱
क्च	𑆑𑇀𑆖
क्प	𑆑𑇀𑆥
क्त्र	𑆑𑇀𑆠𑇀𑆫

𑆱𑇀𑆮𑆫 स्वर

𑆃 𑆄 𑆅 𑆆 𑆇 𑆈 𑆉 𑆊

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

𑆍 𑆎 𑆏 𑆐 𑆃𑆁 𑆃𑆂

ए ऐ ओ औ अं अः।

शारदा स्वर	हिंदी स्वर	शारदा मात्राएं	हिंदी मात्राएं
𑆃	अ		
𑆄	आ	𑆳	ा
𑆅	इ	𑆴	ि
𑆆	ई	𑆵	ी
𑆇	उ	𑆶	ु
𑆈	ऊ	𑆷	ू
𑆉	ऋ	𑆸	ृ
𑆊	ॠ	𑆹	ॄ
𑆍	ए	𑆼	े
𑆎	ऐ	𑆽	ै
𑆏	ओ	𑆾	ो
𑆐	औ	𑆿	ौ
𑆃𑆁	अं	𑆁	ं
𑆃𑆂	अः	𑆂	ः

𑐰𑑂𑐫𑑃𑐖𑐣 व्यंजन

𑐎 𑐏 𑐐 𑐑 𑐒
क ख ग घ ङ

𑐔 𑐕 𑐖 𑐗 𑐘
च छ ज झ ञ

𑐚 𑐛 𑐜 𑐝 𑐞
ट ठ ड ढ ण

𑐟 𑐠 𑐡 𑐢 𑐣
त थ द ध न

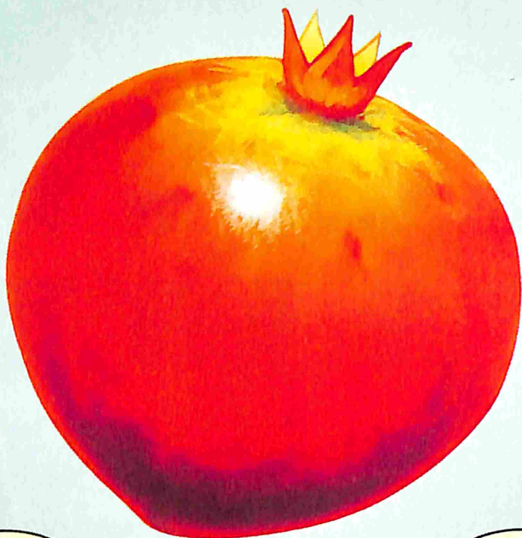
𑐥 𑐦 𑐧 𑐨 𑐩
प फ ब भ म

𑐫 𑐬 𑐮 𑐰
य र ल व

𑐱 𑐲 𑐳 𑐴
श ष स ह

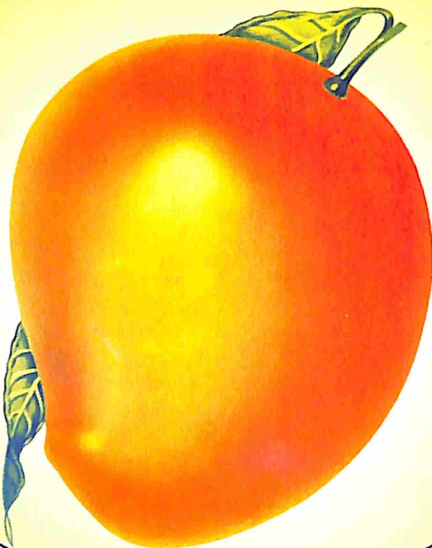
𑐎𑑂𑐲 𑐟𑑂𑐬 𑐖𑑂𑐘 𑐱𑑂𑐬
क्ष त्र ज्ञ श्र

ਅ ਅਨਾਰ



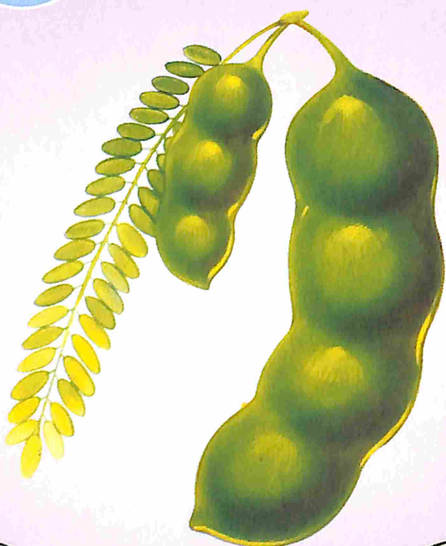
अ अनार

ਅ ਅੰਬ



आ आम

ੲ ਇਮਲੀ



इ इमली

ਈ ਗੰਪ



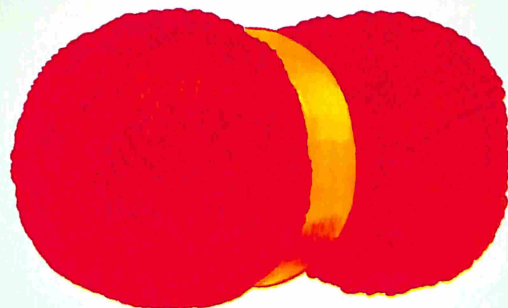
ई ईख

उ उल्लू



उ उल्लू

ऊ ऊन



ऊ ऊन



ऋ ऋषि



ए एड़ी

ਐ ਐਨਕ



ऐ ऐनक

ਓ ਓਖਲੀ



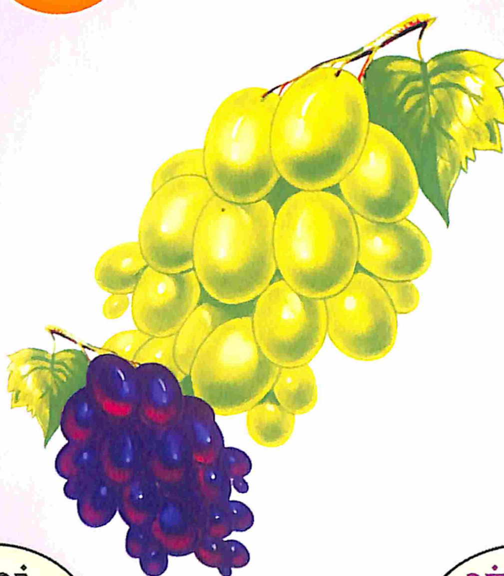
ओ ओखली

ਔ ਔਰਤ



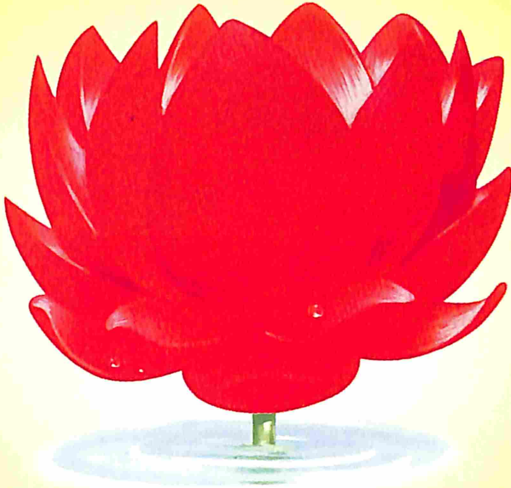
औ औरत

ਅੰ ਅੰਗੂਰ



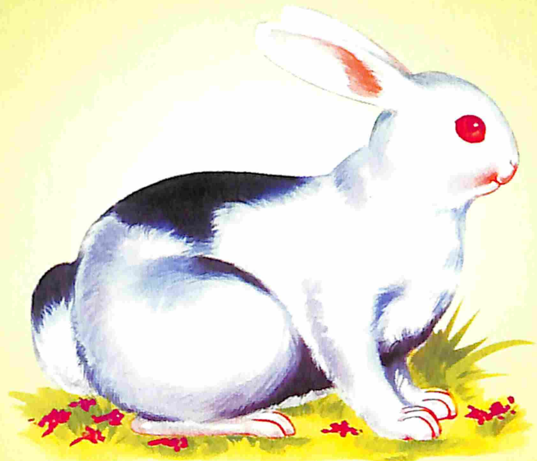
अं अंगूर

क कमल



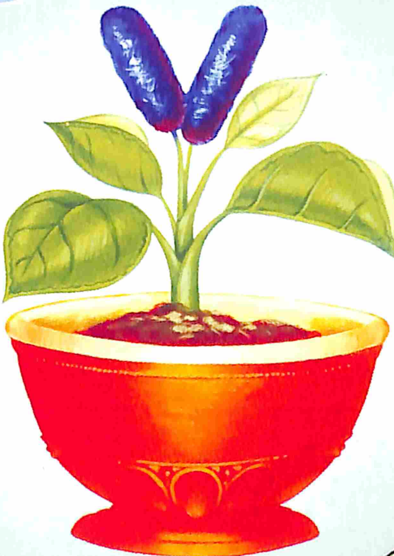
क कमल

ख खरगोश



ख खरगोश

ग गमला



ग गमला

घ घड़ी

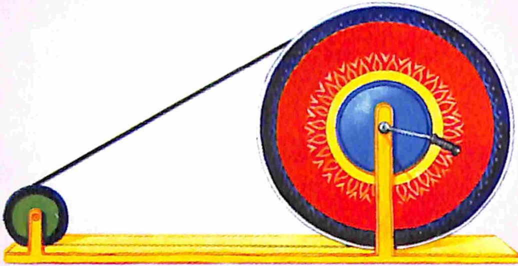


घ घड़ी

ङ ङ

ਚ

ਚਰਖਾ



च

चर्खा

ਛ

ਛਤਰੀ



छ

छतरी

ਜ

ਜਹਾਜ਼



ज

जहाज़

ਝ

ਝੰਡਾ



झ

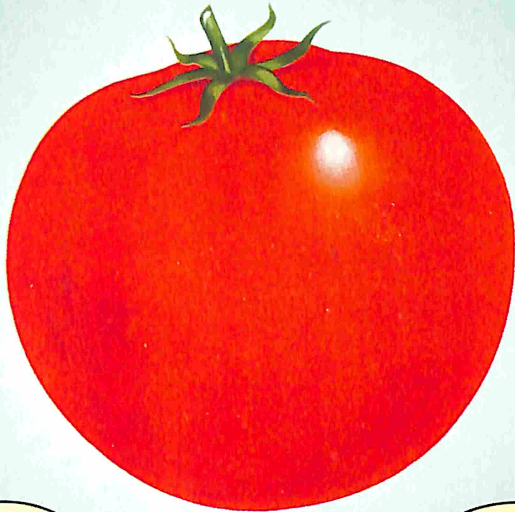
झण्डा

ਞ

ञ

ਟ

ਟਮਾਟਰ

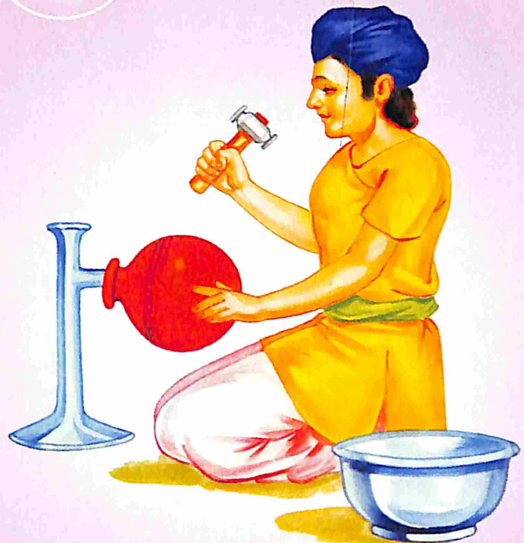


ट

टमाटर

ਠ

ਠਠੇਰਾ



ठ

ठठेरा

ਡ

ਡਮਰੂ



ड

डमरू

ਢ

ਢੱਕਣ



ढ

ढक्कन





ਤ ਤਰਬੂਜ਼



त तरबूज़

ਥ ਥਰਮਸ

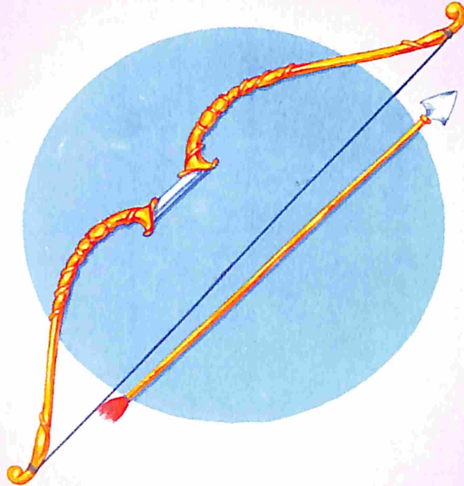


थ थरमस

ਦ ਦਸ਼ਾਨਨ



द दशानन



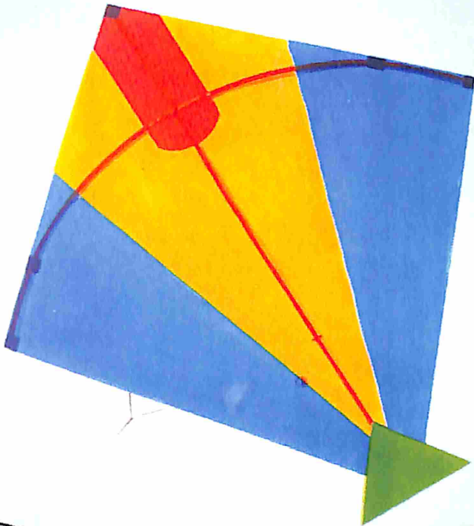
ध

धनुष



न

नल



प

पतंग

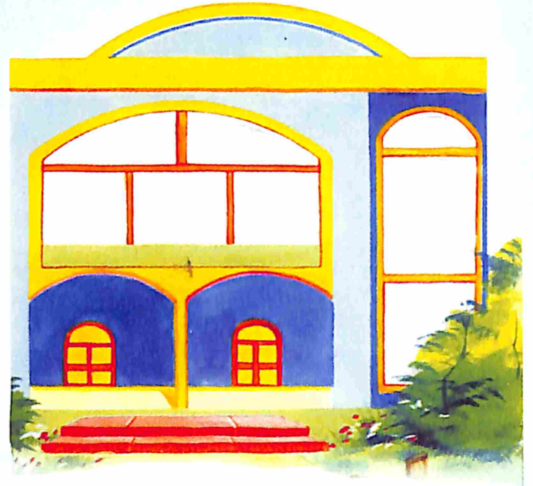


फ

फल



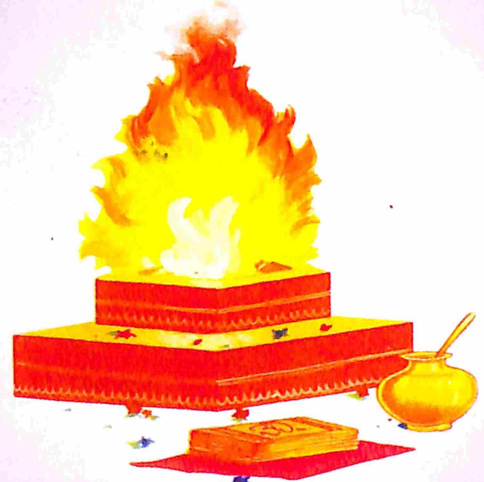
ब बतख



भ भवन



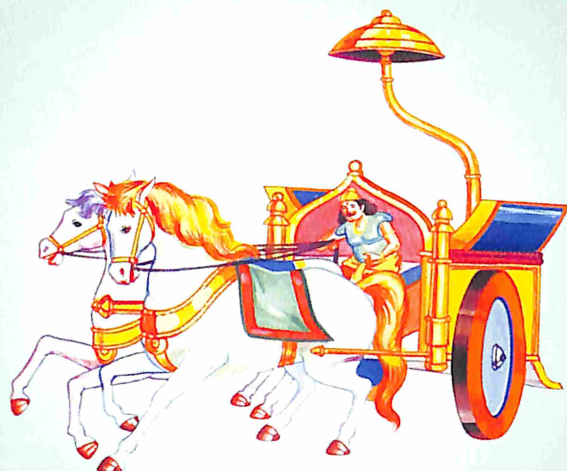
म मछली



य यज्ञ

र

रथ



र

रथ

ल

लट्टू



ल

लट्टू

व

वक



व

वक

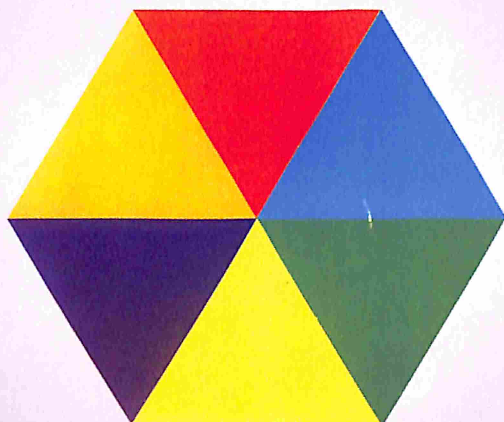
श

शलगम



श

शलगम



ष

षट्कोण



स

सपेरा



ह

हाथी



क्ष

क्षत्रिय



त्र

त्रिशूल



ज्ञ

ज्ञानी



श्र

श्रीफल

बारहखड़ी

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆑	क	𑆒	ख	𑆓	ग	𑆔	घ	𑆕	ङ
𑆑𑆳	का	𑆒𑆳	खा	𑆓𑆳	गा	𑆔𑆳	घा	𑆕𑆳	ङा
𑆑𑆴	कि	𑆒𑆴	खि	𑆓𑆴	गि	𑆔𑆴	घि	𑆕𑆴	ङि
𑆑𑆵	की	𑆒𑆵	खी	𑆓𑆵	गी	𑆔𑆵	घी	𑆕𑆵	ङी
𑆑𑆶	कु	𑆒𑆶	खु	𑆓𑆶	गु	𑆔𑆶	घु	𑆕𑆶	ङु
𑆑𑆷	कू	𑆒𑆷	खू	𑆓𑆷	गू	𑆔𑆷	घू	𑆕𑆷	ङू
𑆑𑆼	के	𑆒𑆼	खे	𑆓𑆼	गे	𑆔𑆼	घे	𑆕𑆼	ङे
𑆑𑆽	कै	𑆒𑆽	खै	𑆓𑆽	गै	𑆔𑆽	घै	𑆕𑆽	ङै
𑆑𑆾	को	𑆒𑆾	खो	𑆓𑆾	गो	𑆔𑆾	घो	𑆕𑆾	ङो
𑆑𑆿	कौ	𑆒𑆿	खौ	𑆓𑆿	गौ	𑆔𑆿	घौ	𑆕𑆿	ङौ
𑆑𑆁	कं	𑆒𑆁	खं	𑆓𑆁	गं	𑆔𑆁	घं	𑆕𑆁	ङं
𑆑𑆂	कः	𑆒𑆂	खः	𑆓𑆂	गः	𑆔𑆂	घः	𑆕𑆂	ङः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆖	च	𑆗	छ	𑆘	ज	𑆙	झ	𑆚	ञ
𑆖𑆳	चा	𑆗𑆳	छा	𑆘𑆳	जा	𑆙𑆳	झा	𑆚𑆳	ञा
𑆖𑆴	चि	𑆗𑆴	छि	𑆘𑆴	जि	𑆙𑆴	झि	𑆚𑆴	ञि
𑆖𑆵	ची	𑆗𑆵	छी	𑆘𑆵	जी	𑆙𑆵	झी	𑆚𑆵	ञी
𑆖𑆶	चु	𑆗𑆶	छु	𑆘𑆶	जु	𑆙𑆶	झु	𑆚𑆶	ञु
𑆖𑆷	चू	𑆗𑆷	छू	𑆘𑆷	जू	𑆙𑆷	झू	𑆚𑆷	ञू
𑆖𑆼	चे	𑆗𑆼	छे	𑆘𑆼	जे	𑆙𑆼	झे	𑆚𑆼	ञे
𑆖𑆽	चै	𑆗𑆽	छै	𑆘𑆽	जै	𑆙𑆽	झै	𑆚𑆽	ञै
𑆖𑆾	चो	𑆗𑆾	छो	𑆘𑆾	जो	𑆙𑆾	झो	𑆚𑆾	ञो
𑆖𑆿	चौ	𑆗𑆿	छौ	𑆘𑆿	जौ	𑆙𑆿	झौ	𑆚𑆿	ञौ
𑆖𑆁	चं	𑆗𑆁	छं	𑆘𑆁	जं	𑆙𑆁	झं	𑆚𑆁	ञं
𑆖𑆂	चः	𑆗𑆂	छः	𑆘𑆂	जः	𑆙𑆂	झः	𑆚𑆂	ञः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆜	ट	𑆝	ठ	𑆞	ड	𑆟	ढ	𑆠	ण
𑆜𑆳	टा	𑆝𑆳	ठा	𑆞𑆳	डा	𑆟𑆳	ढा	𑆠𑆳	णा
𑆜𑆴	टि	𑆝𑆴	ठि	𑆞𑆴	डि	𑆟𑆴	ढि	𑆠𑆴	णि
𑆜𑆵	टी	𑆝𑆵	ठी	𑆞𑆵	डी	𑆟𑆵	ढी	𑆠𑆵	णी
𑆜𑆶	टु	𑆝𑆶	ठु	𑆞𑆶	डु	𑆟𑆶	ढु	𑆠𑆶	णु
𑆜𑆷	टू	𑆝𑆷	ठू	𑆞𑆷	डू	𑆟𑆷	ढू	𑆠𑆷	णू
𑆜𑆼	टे	𑆝𑆼	ठे	𑆞𑆼	डे	𑆟𑆼	ढे	𑆠𑆼	णे
𑆜𑆽	टै	𑆝𑆽	ठै	𑆞𑆽	डै	𑆟𑆽	ढै	𑆠𑆽	णै
𑆜𑆾	टो	𑆝𑆾	ठो	𑆞𑆾	डो	𑆟𑆾	ढो	𑆠𑆾	णो
𑆜𑆿	टौ	𑆝𑆿	ठौ	𑆞𑆿	डौ	𑆟𑆿	ढौ	𑆠𑆿	णौ
𑆜𑆁	टं	𑆝𑆁	ठं	𑆞𑆁	डं	𑆟𑆁	ढं	𑆠𑆁	णं
𑆜𑆂	टः	𑆝𑆂	ठः	𑆞𑆂	डः	𑆟𑆂	ढः	𑆠𑆂	णः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆠	त	𑆡	थ	𑆢	द	𑆣	ध	𑆤	न
𑆠𑆳	ता	𑆡𑆳	था	𑆢𑆳	दा	𑆣𑆳	धा	𑆤𑆳	ना
𑆠𑆴	ति	𑆡𑆴	थि	𑆢𑆴	दि	𑆣𑆴	धि	𑆤𑆴	नि
𑆠𑆵	ती	𑆡𑆵	थी	𑆢𑆵	दी	𑆣𑆵	धी	𑆤𑆵	नी
𑆠𑆶	तु	𑆡𑆶	थु	𑆢𑆶	दु	𑆣𑆶	धु	𑆤𑆶	नु
𑆠𑆷	तू	𑆡𑆷	थू	𑆢𑆷	दू	𑆣𑆷	धू	𑆤𑆷	नू
𑆠𑆼	ते	𑆡𑆼	थे	𑆢𑆼	दे	𑆣𑆼	धे	𑆤𑆼	ने
𑆠𑆽	तै	𑆡𑆽	थै	𑆢𑆽	दै	𑆣𑆽	धै	𑆤𑆽	नै
𑆠𑆾	तो	𑆡𑆾	थो	𑆢𑆾	दो	𑆣𑆾	धो	𑆤𑆾	नो
𑆠𑆿	तौ	𑆡𑆿	थौ	𑆢𑆿	दौ	𑆣𑆿	धौ	𑆤𑆿	नौ
𑆠𑆁	तं	𑆡𑆁	थं	𑆢𑆁	दं	𑆣𑆁	धं	𑆤𑆁	नं
𑆠𑆂	तः	𑆡𑆂	थः	𑆢𑆂	दः	𑆣𑆂	धः	𑆤𑆂	नः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆥	प	𑆦	फ	𑆧	ब	𑆨	भ	𑆩	म
𑆥𑆳	पा	𑆦𑆳	फा	𑆧𑆳	बा	𑆨𑆳	भा	𑆩𑆳	मा
𑆥𑆴	पि	𑆦𑆴	फि	𑆧𑆴	बि	𑆨𑆴	भि	𑆩𑆴	मि
𑆥𑆵	पी	𑆦𑆵	फी	𑆧𑆵	बी	𑆨𑆵	भी	𑆩𑆵	मी
𑆥𑆶	पु	𑆦𑆶	फु	𑆧𑆶	बु	𑆨𑆶	भु	𑆩𑆶	मु
𑆥𑆷	पू	𑆦𑆷	फू	𑆧𑆷	बू	𑆨𑆷	भू	𑆩𑆷	मू
𑆥𑆼	पे	𑆦𑆼	फे	𑆧𑆼	बे	𑆨𑆼	भे	𑆩𑆼	मे
𑆥𑆽	पै	𑆦𑆽	फै	𑆧𑆽	बै	𑆨𑆽	भै	𑆩𑆽	मै
𑆥𑆾	पो	𑆦𑆾	फो	𑆧𑆾	बो	𑆨𑆾	भो	𑆩𑆾	मो
𑆥𑆿	पौ	𑆦𑆿	फौ	𑆧𑆿	बौ	𑆨𑆿	भौ	𑆩𑆿	मौ
𑆥𑆁	पं	𑆦𑆁	फं	𑆧𑆁	बं	𑆨𑆁	भं	𑆩𑆁	मं
𑆥𑆂	पः	𑆦𑆂	फः	𑆧𑆂	बः	𑆨𑆂	भः	𑆩𑆂	मः

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆪	य	𑆫	र	𑆬	ल	𑆮	व	𑆯	श	𑆰	ष
𑆪𑆳	या	𑆫𑆳	रा	𑆬𑆳	ला	𑆮𑆳	वा	𑆯𑆳	शा	𑆰𑆳	षा
𑆪𑆴	यि	𑆫𑆴	रि	𑆬𑆴	लि	𑆮𑆴	वि	𑆯𑆴	शि	𑆰𑆴	षि
𑆪𑆵	यी	𑆫𑆵	री	𑆬𑆵	ली	𑆮𑆵	वी	𑆯𑆵	शी	𑆰𑆵	षी
𑆪𑆶	यु	𑆫𑆶	रु	𑆬𑆶	लु	𑆮𑆶	वु	𑆯𑆶	शु	𑆰𑆶	षु
𑆪𑆷	यू	𑆫𑆷	रू	𑆬𑆷	लू	𑆮𑆷	वू	𑆯𑆷	शू	𑆰𑆷	षू
𑆪𑆼	ये	𑆫𑆼	रे	𑆬𑆼	ले	𑆮𑆼	वे	𑆯𑆼	शे	𑆰𑆼	षे
𑆪𑆽	यै	𑆫𑆽	रै	𑆬𑆽	लै	𑆮𑆽	वै	𑆯𑆽	शै	𑆰𑆽	षै
𑆪𑆾	यो	𑆫𑆾	रो	𑆬𑆾	लो	𑆮𑆾	वो	𑆯𑆾	शो	𑆰𑆾	षो
𑆪𑆿	यौ	𑆫𑆿	रौ	𑆬𑆿	लौ	𑆮𑆿	वौ	𑆯𑆿	शौ	𑆰𑆿	षौ
𑆪𑆁	यं	𑆫𑆁	रं	𑆬𑆁	लं	𑆮𑆁	वं	𑆯𑆁	शं	𑆰𑆁	षं
𑆪𑆂	यः	𑆫𑆂	रः	𑆬𑆂	लः	𑆮𑆂	वः	𑆯𑆂	शः	𑆰𑆂	षः

𑇑	𑇒	𑇓	𑇔	𑇕	𑇖	𑇗	𑇘	𑇙	𑇑𑇐
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी	शारदा	हिंदी
𑆱	स	𑆲	ह	𑆑𑇀𑆰	क्ष	𑆠𑇀𑆫	त्र	𑆘𑇀𑆚	ज्ञ	𑆯𑇀𑆫	श्र
𑆱𑆳	सा	𑆲𑆳	हा	𑆑𑇀𑆰𑆳	क्षा	𑆠𑇀𑆫𑆳	त्रा	𑆘𑇀𑆚𑆳	ज्ञा	𑆯𑇀𑆫𑆳	श्रा
𑆱𑆴	सि	𑆲𑆴	हि	𑆑𑇀𑆰𑆴	क्षि	𑆠𑇀𑆫𑆴	त्रि	𑆘𑇀𑆚𑆴	ज्ञि	𑆯𑇀𑆫𑆴	श्रि
𑆱𑆵	सी	𑆲𑆵	ही	𑆑𑇀𑆰𑆵	क्षी	𑆠𑇀𑆫𑆵	त्री	𑆘𑇀𑆚𑆵	ज्ञी	𑆯𑇀𑆫𑆵	श्री
𑆱𑆶	सु	𑆲𑆶	हु	𑆑𑇀𑆰𑆶	क्षु	𑆠𑇀𑆫𑆶	त्रु	𑆘𑇀𑆚𑆶	ज्ञु	𑆯𑇀𑆫𑆶	श्रु
𑆱𑆷	सू	𑆲𑆷	हू	𑆑𑇀𑆰𑆷	क्षू	𑆠𑇀𑆫𑆷	त्रू	𑆘𑇀𑆚𑆷	ज्ञू	𑆯𑇀𑆫𑆷	श्रू
𑆱𑆼	से	𑆲𑆼	हे	𑆑𑇀𑆰𑆼	क्षे	𑆠𑇀𑆫𑆼	त्रे	𑆘𑇀𑆚𑆼	ज्ञे	𑆯𑇀𑆫𑆼	श्रे
𑆱𑆽	सै	𑆲𑆽	है	𑆑𑇀𑆰𑆽	क्षै	𑆠𑇀𑆫𑆽	त्रै	𑆘𑇀𑆚𑆽	ज्ञै	𑆯𑇀𑆫𑆽	श्रै
𑆱𑆾	सो	𑆲𑆾	हो	𑆑𑇀𑆰𑆾	क्षो	𑆠𑇀𑆫𑆾	त्रो	𑆘𑇀𑆚𑆾	ज्ञो	𑆯𑇀𑆫𑆾	श्रो
𑆱𑆿	सौ	𑆲𑆿	हौ	𑆑𑇀𑆰𑆿	क्षौ	𑆠𑇀𑆫𑆿	त्रौ	𑆘𑇀𑆚𑆿	ज्ञौ	𑆯𑇀𑆫𑆿	श्रौ
𑆱𑆁	सं	𑆲𑆁	हं	𑆑𑇀𑆰𑆁	क्षं	𑆠𑇀𑆫𑆁	त्रं	𑆘𑇀𑆚𑆁	ज्ञं	𑆯𑇀𑆫𑆁	श्रं
𑆱𑆂	सः	𑆲𑆂	हः	𑆑𑇀𑆰𑆂	क्षः	𑆠𑇀𑆫𑆂	त्रः	𑆘𑇀𑆚𑆂	ज्ञः	𑆯𑇀𑆫𑆂	श्रः

𑇑𑇐	𑇒𑇐	𑇓𑇐	𑇔𑇐	𑇕𑇐	𑇖𑇐	𑇗𑇐	𑇘𑇐	𑇙𑇐	𑇑𑇐𑇐
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

व्यंजनों का मेल

[illegible] , पाठ - एक

[illegible]	घर	[illegible]	रथ	[illegible]	कह
[illegible]	फल	[illegible]	रन	[illegible]	सच
[illegible]	कर	[illegible]	खन	[illegible]	हल
[illegible]	जप	[illegible]	डर	[illegible]	जल
[illegible]	गल	[illegible]	नल	[illegible]	भर
[illegible]	अब	[illegible]	धन	[illegible]	जग
[illegible]	कल	[illegible]	टब	[illegible]	चख

[illegible]	मटर	[illegible]	मटर
[illegible]	बतख	[illegible]	महल
[illegible]	समय	[illegible]	नहर
[illegible]	हवन	[illegible]	गरम
[illegible]	पवन	[illegible]	इधर
[illegible]	पकड़	[illegible]	ऐनक
[illegible]	अमर	[illegible]	खनन
[illegible]	उधर	[illegible]	बदल
[illegible]	औरत	[illegible]	कसरत
[illegible]	कलश	[illegible]	बरगद
[illegible]	कमल	[illegible]	मलमल
[illegible]	कलम	[illegible]	शलगम

[illegible] =	फल चख।	[illegible] =	सच कह।
[illegible] =	डर मत।	[illegible] =	जल भर।
[illegible] =	सरपट चल।	[illegible] =	कसरत कर।

पाठ - दो

(¬) आ (ा) मात्रा का व्यंजनों के साथ प्रयोग

का	चा	खा
ता	ना	जा
ला	दा	बा

ताला	छाता
माला	बाजा
खाना	माता
मामा	नाना
दादा	ताया
चाचा	काका

= राजा आया।	= बाजार जा।
= माला लाया।	= आम ला।
= बाजा बजा।	= काका गया।
= चाचा गया।	= राजा आया।

= राम गाना गा।

= छाता साथ ला।

= राम भाग जा।

= बाहर जा, ताला लगा।

= नाना ताला लाया।

= खाना खा।

= काका बाजा बजा।

= एक फल खा।

ਪਾਠ - ਤੀਨ, पाठ - तीन

ੲ (ਿ) इ (ि) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

ਕ + ੲ = ਕਿ	कि	ਕਿ + ਰ + ਣ = ਕਿਰਣ	किरण	ਨ + ੲ + ਬ = ਨਿਬ	निब
ਪ + ੲ = ਪਿ	पि	ਹਿ + ਰ + ਣ = ਹਿਰਣ	हिरण	ਪ + ੲ + ਨ = ਪਿਨ	पिन

ਦਿਨ = दिन	ਦਿਲ = दिल	ਕਿਸ = किस	ਗਿਰ = गिर
ਤਿਲ = तिल	ਮਿਲ = मिल	ਜ਼ਿਦ = ज़िद	ਫਿਰ = फिर
ਤਿਥਿ = तिथि	ਵਿਧਿ = विधि	ਦਿਯਾ = दिया	ਪਿਤਾ = पिता
ਗਿਟਾਰ = गिटार	ਸਿਯਾਰ = सियार	ਕਿਤਾਬ = किताब	ਚਿੜਿਯਾ = चिड़िया

ਵਿਮਲ ਜਾ = विमल जा।	ਸਿਤਾਰ ਬਜਾ = सितार बजा।
ਦਿਨ ਮੇਂ ਜਾ = दिन में जा।	ਦਿਯਾ ਜਲਾ = दिया जला।
ਜ਼ਿਦ ਮਤ ਕਰ = ज़िद मत कर।	ਦਿਲ ਮਿਲ ਗਯਾ = दिल मिल गया।

ਦਿਲ ਲਗਾ ਕਰ ਪੜ੍ਹ = दिल लगा कर पढ़।
ਚਿੜਿਯਾ ਦਾਨਾ ਖਾ = चिड़िया दाना खा।
ਪਿਤਾ ਕਾ ਕਹਨਾ ਮਾਨ = पिता का कहना मान।
ਕਿਤਾਬ ਉਠਾ ਕਰ ਲਾ = किताब उठा कर ला।
ਹਿਰਣ ਘਾਸ ਖਾਤਾ ਥਾ = हिरण घास खाता था।
ਨਾਰਿਯਲ ਲਾ ਕਰ ਇਧਰ ਰਖ = नारियल ला कर इधर रख।
ਵਿਮਲ ਕਿਸ਼ਮਿਸ਼ ਖਾ = विमल किशमिश खा।
ਅਪਨਾ ਦਿਲ ਸਾਫ਼ ਰਖਾ ਕਰ = अपना दिल साफ रखा कर।
ਸਾਇਕਿਲ ਪਰ ਬਾਜ਼ਾਰ ਜਾ = साइकिल पर बाज़ार जा।
ਸਿਤਾਰ ਬਜਾ ਕਰ ਗਾ = सितार बजा कर गा।
ਲੜਕਾ ਚਿੱਲਾਯਾ = लड़का चिल्लाया।
ਦਿਨ ਨਿਕਲ ਆਯਾ = दिन निकल आया।

੫੦-ਮਰ, पाठ - चार

ਂ (ੀ) ई (ी) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

ਕੀ	=	की	ਡੀ	=	डी	ਭੀ	=	भी
ਘੜੀ	=	घड़ी	ਵੀਰ	=	वीर	ਨੀਲ	=	नील
ਮੀਨ	=	मीन	ਨੀਰ	=	नीर	ਭੀਲ	=	भील
ਬਕਰੀ	=	बकरी	ਕਕੜੀ	=	ककड़ी	ਸਾਥੀ	=	साथी
ਸੀਤ	=	सीता	ਝੀਲ	=	झील	ਖੀਰ	=	खीर
ਮਦਾਰੀ	=	मदारी	ਪਾਨੀ	=	पानी	ਸ਼ੀਤਲ	=	शीतल
ਅੱਛੀ	=	अच्छी	ਆਲਸੀ	=	आलसी	ਹਾਥੀ	=	हाथी

ਸੀਤ ਆਈ	=	सीता आई।
ਅੱਛੀ ਸੀ ਖੀਰ ਬਨਾਈ	=	अच्छी सी खीर बनाई।
ਸ਼ੀਤਲ ਪਾਨੀ ਭਰ	=	शीतल पानी भर।
ਬਕਰੀ ਹਰੀ ਹਰੀ ਘਾਸ ਖਾ ਗਈ	=	बकरी हरी हरी घास खा गई।
ਝੀਲ ਪਰ ਮਤ ਜਾ	=	झील पर मत जा।
ਮਦਾਰੀ ਆਯਾ ਤਮਾਸ਼ਾ ਦਿਖਾਯਾ	=	मदारी आया, तमाशा दिखाया।
ਹਾਥੀ ਆਯਾ ਜੰਗਲ ਸੇ ਲਕੜੀ ਲਾਯਾ	=	हाथी आया, जंगल से लकड़ी लाया।
ਸ਼ੀਲਾ ਅਪਨੀ ਵੀਣਾ ਬਜਾ	=	शीला अपनी वीणा बजा।
ਘਰ ਕੀ ਖਿੜਕੀ ਸਾਫ ਕਰ	=	घर की खिड़की साफ कर।
ਰਾਨੀ ਚਰਖੀ ਚਲਾਤੀ ਥੀ	=	रानी चरखी चलाती थी।
ਗਾਯ ਹਰੀ ਪੀਲੀ ਤਥਾ ਕਾਲੀ ਥੀ	=	गाय हरी, पीली तथा काली थी।
ਹਾਥੀ ਪਰ ਚੜ੍ਹ	=	हाथी पर चढ़।
ਪਾਨੀ ਸ਼ੀਤਲ ਹੈ	=	पानी शीतल है।

ਪਾਠ-ਪੰਜ, पाठ - पांच

ਉ(ੁ) उ(ु) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

ਕੁ	कु	ਯੁ	यु	ਬੁ	बु	ਲੁ	लु

ਛੁਰੀ	=	छुरी	ਪੁਤ੍ਰ	=	पुत्र	ਪੁਜਾਰੀ	=	पुजारी
ਤੁਮ	=	तुम	ਗੁਲਾਬ	=	गुलाब	ਮੁਕੁਟ	=	मुकुट
ਗੁੜ	=	गुड	ਰੁਪਯਾ	=	रुपया	ਗੁਰੁ	=	गुरु
ਸੁਬਹ	=	सुबह	ਮੁਖ	=	मुख	ਚੁਨ	=	चुन
ਦੁਕਾਨ	=	दुकान	ਗੁਣ	=	गुण	ਪੁਲ	=	पुल
ਪੁਲ	=	पुल	ਬੁਲਬੁਲ	=	बुलबुल	ਤੁਲਸੀ	=	तुलसी
ਬੁਨ	=	बुन				ਗੁੜਿਯਾ	=	गुड़िया

ਸੁਬਹ ਸੁਬਹ ਉਠ = सुबह सुबह उठ।
ਪੁਜਾਰੀ ਆਯਾ = पुजारी आया।
ਦੁਕਾਨ ਪਰ ਜਾ = दुकान पर जा।

ਮੁਕੁਟ ਲਾ = मुकुट ला।
ਗੁੜ ਖਾ = गुड़ खा।
ਪੁਲ ਪਰ ਮਤ ਚੜ੍ਹ = पुल पर मत चढ़।

ਤੁਲਸੀ ਕੀ ਮਾਲਾ ਲਾਯਾ = तुलसी की माला लाया।
ਇੰਜਨ ਛੁਕ ਛੁਕ ਕਰਤਾ ਆਯਾ = इंजन छुक-छुक करता आया।
ਛੁਰੀ ਪਰ ਧਾਰ ਲਗਾ = छुरी पर धार लगा।
ਪੁਤ੍ਰ ਆਯਾ ਰੁਪਯਾ ਲਾਯਾ = पुत्र आया रुपया लाया।
ਲੜਕੀ ਪੁਲ ਪਰ ਖੜੀ ਥੀ = लड़की पुल पर खड़ी थी।
ਬੁਲ ਬੁਲ ਮਧੁਰ ਗਾਨਾ ਸੁਨਾ = बुल बुल मधुर गाना सुना।
ਜੁਲਾਹਾ ਕਪੜਾ ਬੁਨ ਰਹਾ ਥਾ = जुलाहा कपड़ा बुन रहा था।
ਗੁੜਿਯਾ ਕੁਰਸੀ ਪਰ ਰਖ = गुड़िया कुरसी पर रख।
ਸੁਦਾਮਾ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਤਾ ਥਾ = सुदामा माता पिता की सेवा करता था।

[illegible], पाठ - छः

ऊ ([illegible]) ऊ (ू) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

[illegible]	=	कू	[illegible]	=	फू	[illegible]	=	जू
[illegible]	=	चू	[illegible]	=	दू	[illegible]	=	धू
[illegible]	=	फूल	[illegible]	=	झूला	[illegible]	=	जूता
[illegible]	=	कूक	[illegible]	=	चूहा	[illegible]	=	धूप
[illegible]	=	पूजा	[illegible]	=	कूड़ा	[illegible]	=	ऊन
[illegible]	=	मूली	[illegible]	=	भूखा	[illegible]	=	धूल
[illegible]	=	नूर	[illegible]	=	राजू	[illegible]	=	दूध

[illegible]	=	पूजा कर।
[illegible]	=	धूप ला।
[illegible]	=	फूल चढ़ा।
[illegible]	=	रामू उठ।

[illegible]	=	भालू आया नाच दिखाया।
[illegible]	=	चूहा हानि करता था।
[illegible]	=	बालक भूखा रह गया।
[illegible]	=	सीता झूला झूलती रह गई।
[illegible]	=	दुकानदार तराजू पर आलू रख।
[illegible]	=	सूरज निकला।
[illegible]	=	नहाकर पूजा पाठ कर।
[illegible]	=	रामू नाचता कूदता था।
[illegible]	=	धूल मत उड़ा।
[illegible]	=	दूध उबाल।
[illegible]	=	तरबूज़ मत खा।

[illegible], पाठ - सात

८ (ृ) ऋ (ृ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

[illegible]	=	कृ	[illegible]	=	तृ	[illegible]	=	धृ
[illegible]	=	मृ	[illegible]	=	वृ	[illegible]	=	ऋषि
[illegible]	=	कृपा	[illegible]	=	वृक्ष	[illegible]	=	कृषि
[illegible]	=	नृप	[illegible]	=	मृग	[illegible]	=	ऋतु
[illegible]	=	घृत	[illegible]	=	तृण	[illegible]	=	मृत्यु

[illegible]	=	दु:खी पर कृपा कर।
[illegible]	=	मृग भागता है।
[illegible]	=	वृक्ष लगे हैं।
[illegible]	=	ऋषि तप करता है।
[illegible]	=	गाय का घृत अमृत है।
[illegible]	=	ऋषि मृग को पालते हैं।
[illegible]	=	एक ऋषि था।
[illegible]	=	उन का एक मृग था।
[illegible]	=	मृग तृण खाता है।
[illegible]	=	एक दिन एक नृप आया।
[illegible]	=	मृग डर गया।
[illegible]	=	वह ऋषि की ओर भागा।
[illegible]	=	नृप ! मृग पर कृपा करें।
[illegible]	=	यह आश्रम का मृग है।

[illegible], पाठ - आठ

[illegible] (–) ए (ـ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

[illegible]	=	के	[illegible]	=	बे	[illegible]	=	खे
[illegible]	=	शे	[illegible]	=	णे	[illegible]	=	बेटा
[illegible]	=	मेज़	[illegible]	=	पेड़	[illegible]	=	ठेला
[illegible]	=	शेर	[illegible]	=	खेल	[illegible]	=	नेता
[illegible]	=	भेड	[illegible]	=	बेल	[illegible]	=	गणेश
[illegible]	=	सेब	[illegible]	=	खेत	[illegible]	=	राजेश
[illegible]	=	रेल	[illegible]	=	मेला	[illegible]		कमलेश

[illegible]	=	कमलेश देख जादू का खेल।
[illegible]	=	नदी किनारे पेड़ ही पेड़।
[illegible]	=	दिनेश देर मत कर।
[illegible]	=	ठेला ला, रेत भर।
[illegible]	=	तेज़ चल।
[illegible]	=	जलेबी खा।
[illegible]	=	गणेश की पूजा कर।
[illegible]	=	बेटा मेहनत कर।
[illegible]	=	रेलगाड़ी आई।
[illegible]	=	रेखा गाड़ी पर चढ़ गई।
[illegible]	=	शेर देख कर भेड़ डर गया।
[illegible]	=	मीठे सेब ले कर आ।
[illegible]	=	चिड़िया पेड़ से उड़ गई।

[illegible], पाठ - नौ

[illegible] (ॢ) ऐ (ॣ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

[illegible]	=	कै	[illegible]	=	पै	[illegible]	=	थै
[illegible]	=	बै	[illegible]	=	लै	[illegible]	=	सैर
[illegible]	=	बैल	[illegible]	=	मैला	[illegible]	=	पैसा
[illegible]	=	पैर	[illegible]	=	थैला	[illegible]	=	पैदल
[illegible]	=	मैना	[illegible]	=	भैया	[illegible]	=	सैनिक
[illegible]	=	गैया	[illegible]	=	तैरना	[illegible]	=	बैठना

[illegible]	=	शैलेष आ।
[illegible]	=	सैर पर चल।
[illegible]	=	कैलाश से थैला ला।
[illegible]	=	पैसा कमा।
[illegible]	=	बैल से बच।
[illegible]	=	तैरना सीख।
[illegible]	=	सैनिक देश का रक्षक है।
[illegible]	=	बैठ कर अखबार पढ़।
[illegible]	=	भैया बैलगाड़ी ले जा।
[illegible]	=	थैला मैला मत कर।
[illegible]	=	भैय्या ऐनक लगा कर,
[illegible]	=	थैला लेकर बाजार जाता है।
[illegible]	=	बाजार से पैदल घर आता है।
[illegible]		अपने पैर साफ-सुथरे रखता है।

ਪਾਠ - ਦਸ, पाठ - दस

ਓ (ੋ) ओ (ो) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

ਕੋ	=	को	ਮੋ	=	मो	ਖੋ	=	खो
ਤੋ	=	तो	ਰੋ	=	रो	ਘੋੜਾ	=	घोड़ा
ਸ਼ੋਰ	=	शोर	ਬੋਤਲ	=	बोतल	ਮੋਟਰ	=	मोटर
ਮੋਰ	=	मोर	ਤੋਤਾ	=	तोता	ਲੋਮੜੀ	=	लोमड़ी
ਗੋਲ	=	गोल	ਡੋਰ	=	डोर	ਟੋਕਰੀ	=	टोकरी
ਕੋਟ	=	कोट	ਤੋਪ	=	तोप	ਓਖਲੀ	=	ओखली
ਘੋੜਾ	=	घोड़ा	ਲੋਟਾ	=	लोटा	ਮੋਹਨ	=	मोहन
ਗੋਭੀ	=	गोभी	ਢੋਲਕ	=	ढोलक	ਸੋਹਨ	=	सोहन

ਗੋਪਾਲ ਘੋੜੇ ਪਰ ਬੈਠ = गोपाल घोड़े पर बैठ।

ਮੋਹਨ ਕੋਟ ਪਹਨ = मोहन कोट पहन।

ਸ਼ੋਰ ਮਤ ਕਰ = शोर मत कर।

ਮੋਰ ਨਾਚ ਰਹਾ ਹੈ = मोर नाच रहा है।

ਘੋੜਾ ਬੋਝਾ ਢੋਤਾ ਹੈ = घोड़ा बोझा ढोता है।

ਕੋਯਲ ਕੀ ਮੀਠੀ ਬੋਲੀ ਸੁਨ = कोयल की मीठी बोली सुन।

ਢੋਲਕ ਕੀ ਤਾਲ ਪਰ ਨਾਚ = ढोलक की ताल पर नाच।

ਟੋਕਰੀ ਸਿਰ ਪਰ ਰਖ = टोकरा सिर पर रख।

ਮੋਰ ਨਾਚਤਾ ਹੈ = मोर नाचता है।

ਘੋੜਾ ਭਾਗਤਾ ਹੈ = घोड़ा भागता है।

ਮੋਟਾ ਆਦਮੀ ਭਾਗਤਾ ਹੈ = मोटा आदमी भागता है।

ਤੋਤਾ ਫਲ ਖਾਤਾ ਹੈ = तोता फल खाता है।

ਪਠ-ਗ੍ਯਾਰਹ, पाठ - ग्यारह

ਔ (ੌ) औ (ौ) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

ਕੌ	=	कौ	ਹੌ	=	हौ	ਸੌ	=	सौ
ਚੌ	=	चौ	ਦੌ	=	दौ	ਗੌ	=	गौ
ਨੌ	=	नौ	ਮੌ	=	मौ	ਬੌ	=	बौ
ਪੌ	=	पौ	ਗੌਰੀ	=	गौरी	ਖਿਲੌਨਾ	=	खिलौना
ਦੌੜਾ	=	दौड़ा	ਰੌਨਕ	=	रौनक	ਬਿਛੌਨਾ	=	बिछौना
ਪੌਧਾ	=	पौधा	ਦੌਲਤ	=	दौलत	ਬੌਨਾ	=	बौना
ਮੌਸੀ	=	मौसी	ਨੌਕਰ	=	नौकर	ਮੌਸਮ	=	मौसम

ਬੌਨਾ ਆਯਾ ਹੈ = बौना आया है।

ਮੌਸੀ ਆਈ = मौसी आई।

ਪਕੌੜੇ ਔਰ ਕਚੌੜੀ ਲਾਈ = पकौड़े और कचौड़ी लाई।

ਦੌੜ ਕਰ ਜਾ = दौड़ कर जा।

ਬਿਛੌਨਾ ਬਿਛਾ = बिछौना बिछा।

ਮੌਸਮ ਅੱਛਾ ਹੈ = मौसम अच्छा है।

ਕੌਆ ਕਾਲਾ ਹੋਤਾ ਹੈ = कौआ काला होता है।

ਔਰਤ ਕਪੜੇ ਧੋਤੀ ਹੈ = औरत कपड़े धोती है।

ਨੌਕਾ ਤੈਰਤੀ ਹੈ = नौका तैरती है।

ਮੌਕਾ ਦੇਖ ਕਰ ਬਾਤ ਕਰ = मौका देख कर बात कर।

ਲੜਕਾ ਦੌੜਤਾ ਹੈ = लड़का दौड़ता है।

ਵਹ ਕੌਨ ਆਯਾ ਹੈ = वह कौन आया है।

५०- वगत, पाठ - बारह

मं (ं) अं (ं) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

मं	=	अं	गं	=	रं	मं	=	शं
कं	=	कं	ल्रं	=	जं	ढं	=	फं
कं०	=	कंठ	ढंभ	=	हंस	मंक	=	चांद
गंग	=	रंग	भडंग	=	पतंग	ऊंट	=	ऊंट
भंग	=	संग	वभंड	=	बसंत	कंम	=	कांच
भंगप	=	पंख	भंगल	=	मंगल	मांप	=	आंख
मांप	=	शंख	मंमन	=	चंदन	मंगुर	=	अंगूर
डंग	=	तंग	मंडा	=	झंडा	लंगुर	=	लंगूर
रंग	=	ढंग	वंमर	=	बंदर	भंमिर	=	मंदिर

कौए क गंग कल्ल ढै = कौए का रंग काला है।

डोडे क कं० नील ढै = तोते का कंठ नीला है।

गंग भं भनी ढै = गंगा में पानी है।।

भेर क भंगप ल = मोर का पंख ला।

भंमिर भं मांप वल्र गढ ढै = मंदिर में शंख बज रहा है।

वभंड रडु अु गई = बसंत ऋतु आ गई।

ढभग मंडा डिगंग ढै = हमारा झंडा तिरंगा है।

मंमन भंमिर भं ल्र = चंदन मंदिर में जा।

लंगुर मंगुर पप गढ ढै = लंगूर अंगूर खा रहा है।

ऊंट कुएं के भभ वैठ० ढै = ऊंट कुएं के पास बैठा है।

मंगुर भी०डे ढै = अंगूर मीठे होते हैं।

[illegible] - [illegible], पाठ - तेरह

[illegible] (:) अः (:) का व्यंजनों के साथ प्रयोग

[illegible]	=	छः	[illegible]	=	नः	[illegible]	=	भः
[illegible]	=	दुः	[illegible]	=	मः	[illegible]	=	शनैः
[illegible]	=	प्रातः	[illegible]	=	नरः	[illegible]	=	प्रायः
[illegible]	=	दुःख	[illegible]	=	नमः	[illegible]	=	स्वः
[illegible]	=	भुवः	[illegible]	=	फलतः			

[illegible]	=	रानो प्रातः छः बजे उठती है।
[illegible]	=	वह सब का आदर करती है।
[illegible]	=	प्रातः काल सूरज निकलने
[illegible]	=	से पहले उठना चाहिये।
[illegible]	=	प्रातः सैर को भी जाना चाहिये।
[illegible]	=	किसी को दुःख मत दो।
[illegible]	=	राम के छः बहन भाई हैं।
[illegible]	=	दुःख में साहस मत छोड़ो।
[illegible]	=	प्रातः बड़ों के पैर छुओ।
[illegible]	=	छः बज गये।
[illegible]	=	प्रातः उठ।
[illegible]	=	पुनः नहा।
[illegible]	=	रास्ते में शनैः शनैः चलो।

शारदा लिपि
शारदादेश (कश्मीर) की संस्कृति का चिह्न है।

इस की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है

शारदा पढ़िये
और
अपने बच्चों को पढ़ने की ओर प्रेरित करें।

प्रकाशक

पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607

E-mail : punchang.vijayshwar@yahoo.com



पं. प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध संस्थान

अजीत कालोनी, जम्मू

Contact No. : 0191-2555607, 09419133233

Email : punchang.vijayshwar@yahoo.com